सरल हिन्दी अनुवाद, श्री गणेश नामाष्टकस्तोत्र,
श्री गणेश मंत्र, अष्टोत्तर शतनामावलि
एवं आरती सहित

रंगीन चित्रों सहित
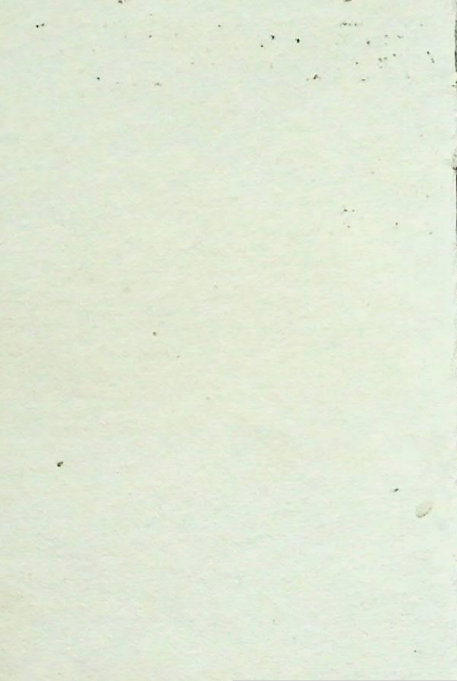
॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री गणेश चालीसा

सरल हिन्दी अनुवाद,
श्री गणेश नामाष्टकस्तोत्र, श्री गणेश मंत्र,
अष्टोत्तर शतनामावलि तथा आरती सहित
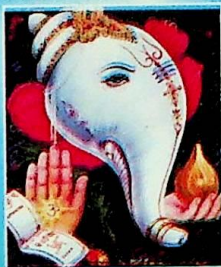
महामाया पब्लिकेशन्स
6/11 सदर बाज़ार, जालन्धर कैंट।
फोन नं० : 0181-2212696
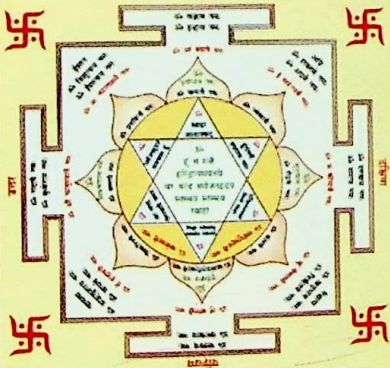
12/-

दन्तपाणिं च वरदं ब्रह्मण्यं ब्रह्मचारिणम्।
पुण्यं गणपतिं दिव्यं विघ्नराजं नमाम्यहम्॥

श्री गणेश चालीसा प्रारम्भ

॥ दोहा ॥

जय जय जय वंदन भुवन, नंदन गौरि महेश।
दुख द्वंद्वन फंदन हरन, सुंदर सुवन गणेश॥

हे शिव पार्वती के सुन्दर लाडले पुत्र तुम्हारी जय हो। दुःख दर्द हरण करने वाले जगत वन्दनीय गणेशजी आपकी जय हो।

जयति शंभु सुत गौरी नंदन।
विघ्न हरन नासन भव फंदन॥

शिव पार्वती के पुत्र आप हर प्रकार के विघ्नों को नष्ट तथा बन्धन से मुक्त करने वाले हैं।

जय गणनायक जनसुख दायक।
विश्व विनायक बुद्धि विधायक॥

बुद्धि बढ़ाने वाले और भक्तों के सुखदाता गौरी पुत्र गणपति आपकी जय हो।

एक रदन गज बदन विराजत।
वक्रतुंड शुचि शुंड सुसाजत॥

हे गज समान मुख वाले गणपति एक दन्त तथा सूंड आपके मुख की पवित्र शोभा हैं।

तिलक त्रिपुण्ड भाल शशि सोहत।
छबि लखि सुरनर मुनि मन मोहत ।।

आपका सौन्दर्य हर प्राणी को मुग्ध करने वाला तथा मस्तक पर त्रिपुंड और चन्द्रमा की छवि है।

उर मणिमाल सरोरुह लोचन।
रत्न मुकुट सिर सोच विमोचन।।
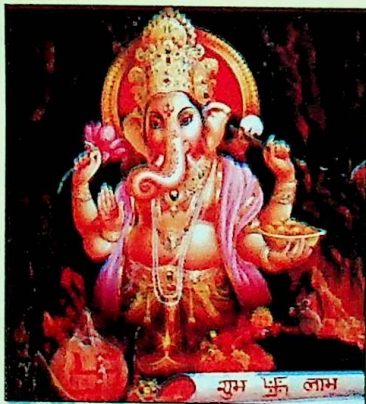
आप भक्तों की चिंता हरने वाले, कमल नयन, मणिमाला एवं रत्नों का मुकुट धारण किए हुए हैं।

कर कुठार शुचि सुभग त्रिशूलम्।
मोदक भोग सुगंधित फूलम्॥
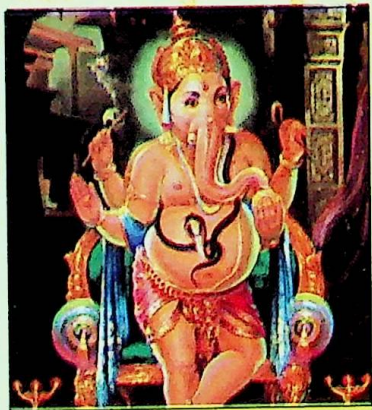
आपके हाथ में कुठार एवं त्रिशूल सुशोभित हैं। लड्डुओं के भोग एवं सुगन्धित फल आपको प्रिय हैं।

सुंदर पीताम्बर तन साजित।
चरण पादुका मुनि मन राजित।
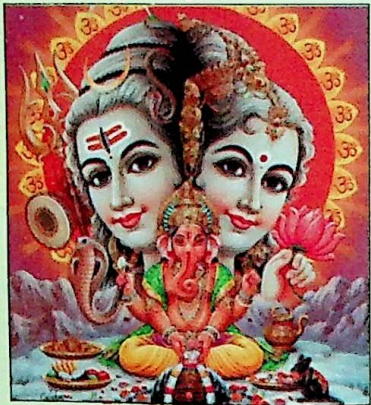
आपके बदन पर पीले वस्त्र शोभित हैं, आपकी चरण पादुका मुनियों को प्रफुल्लित करती है।

धनि शिव सुवन भुवन सुख दाता।
गौरी ललन षडानन भ्राता॥

त्रिभुवन को सुखी बनाने वाले, हे शिव के पुत्र, कार्तिकेय अनुज भ्राता, गौरी नन्दन आप धन्य हैं।

ऋद्धि सिद्धि तव चंवर सुढारहिं।
मूषक वाहन सोहित द्वारहिं॥
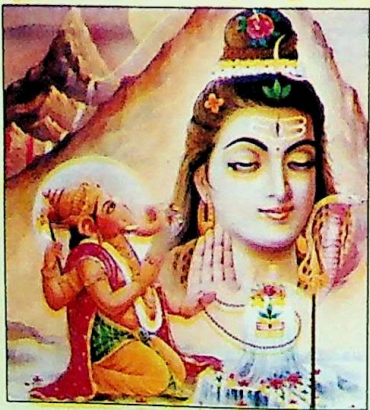
ऋद्धियां-सिद्धियां सदैव आपकी सेवा में चंवर डुलाती हैं एवं वाहन मूषक सदा द्वार पर विराजमान रहता है।

तव महिमा को बरनै पारा।
जन्म चरित्र विचित्र तुम्हारा॥

हे गणपति! आपकी महिमा अवर्णनीय है। आपका जीवन चरित्र अद्भुत एवं चमत्कारी है।

एक असुर शिवरूप बनावै।
गौरहिं छलन हेतु तहं आवै॥
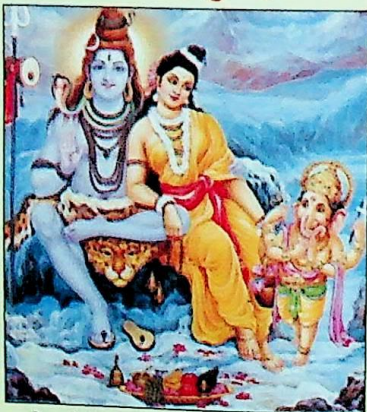
हे गौरीनंदन! एक दैत्य, मां पार्वती को छलने की गर्ज से हर रोज शिव रूप बना कर आया करता था।

एहि कारण ते श्री शिव प्यारी।
निज तन मैल मूर्ति रचि डारी ।।
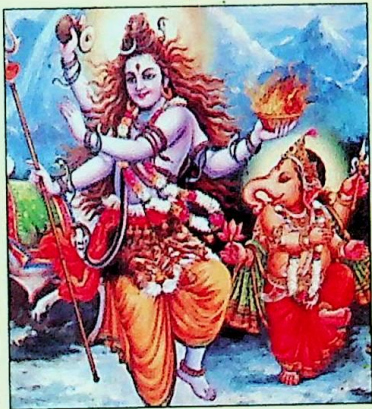
इस कारण माता पार्वती ने अपने शरीर से मैल उतार कर बालक गणेश की रचना की।

सो निज सुत करि गृह रखवारे।
द्वारपाल सम तेहिं बैठारे॥
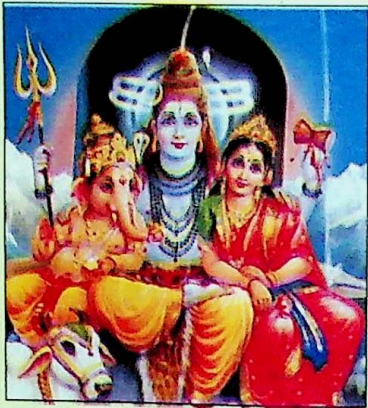
माता पार्वती ने आपको अपना पुत्र घोषित कर घर की रक्षा हेतु प्रहरी नियुक्त कर द्वार पर बैठा दिया।

जबहिं स्वयं श्री शिव तहं आए।
बिनु पहिचान जान नहिं पाए॥
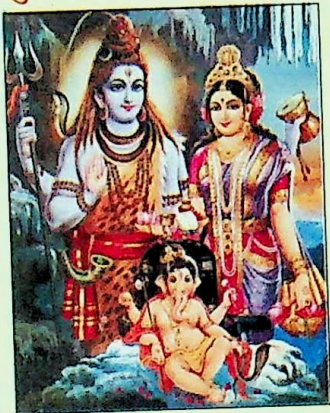
जब भगवान शिव वहां स्वयं पधारे तब उन्हें पहचान न पाने के कारण आपने गृह प्रवेश नहीं करने दिया।

पूछ्यो शिव हो किनके लाला।
बोलत भे तुम वचन रसाला॥

जब शिवजी ने आपसे परिचय पूछा कि तुम किसके पुत्र हो? तब आपने मधुर वाणी में कहा।

मैं हूँ गौरी सुत सुनि लीजै।
आगे पग न भवन हित दीजै॥
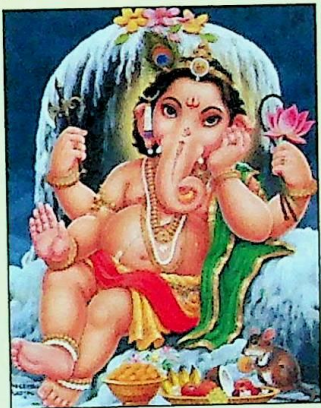
ध्यान से सुनिए-मैं गौरी पुत्र गणेश हूँ। आप कृपा करके घर के अन्दर जाने का प्रयास न करें।

आवहिं मातु बूझि तब जाओ।
बालक से जनि बात बढ़ाओ॥

मैं मां से पूछ कर आता हूँ तत्पश्चात् ही आप अन्दर आ सकेंगे। आप बालक जान कर बात न बढ़ाएं।

चलन चह्यो शिव बचन न मान्यो।
तब ह्वै क्रुद्ध युद्ध तुम ठान्यो॥
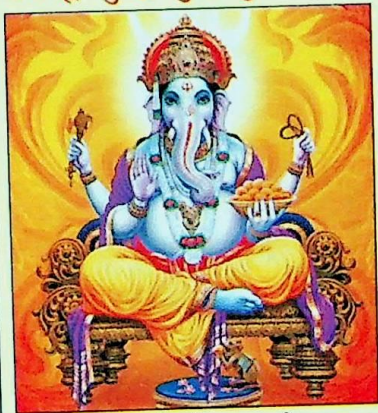
जब शिवजी ने आपकी बात न मानी तब आपने क्रोध में आकर शिवजी को युद्ध हेतु ललकारा।

तत्क्षण नहिं कछु शंभु बिचार्‍यो।
गहि त्रिशूल भूल वश मार्‍यो॥
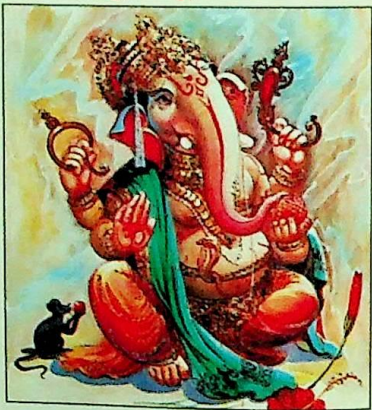
तब शिव जी ने बिना विचार किए तत्काल अपने त्रिशूल से भूलवश आप पर प्रहार किया।

शिरिष फूल सम सिर कटि गयउ।
छंट उड़ि लोप गगन महं भयउ॥
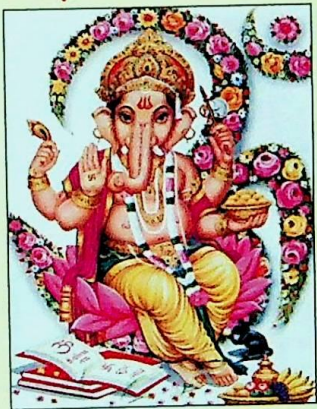
आपका सिर शिरीष पुष्प के समान कट कर तुरंत आकाश में उड़ गया और वहीं गायब हो गया।

गयो शंभु जब भवन मंझारी।
जहं बैठी गिरिराज कुमारी॥

जब भगवान शिव अंतः पुर में पहुंचे जहां गिरिराज सुता माता पार्वती विराजमान थीं।

पूछे शिव निज मन मुसकाये।
कहहु सती सुत कहं ते जाये॥
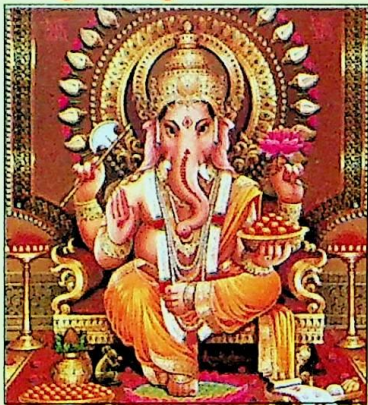
शिवजी ने मन-ही-मन मुस्कुराते हुए पूछा-हे सती पार्वती! तुमने कब अपने पुत्र को जन्म दिया।

खुलिगे भेद कथा सुनि सारी।
गिरी विकल गिरिराज दुलारी॥

शिव के तर्क-वितर्क से हत्या का भेद खुल गया। जिससे पार्वती विकल हो धरती पर गिर पड़ी।

किये न भल स्वामी अब जाओ।
लाओ शीष जहां ते पाओ॥

और पार्वती बोली-हे स्वामी! आपने यह क्या किया? जैसे भी हो, मेरे पुत्र का सिर ले आयें।

चल्यो विष्णु संग शिव विज्ञानी।
मिल्यो न सो हस्तिहिं सिर आनी॥
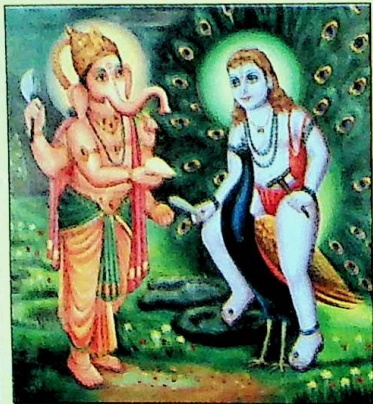
सिर प्राप्त न होने पर पराज्ञान में निपुण शिवजी विष्णु जी के साथ जाकर एक हाथी का सिर ले आए।

धड़ ऊपर स्थित कर दीन्ह्यो।
प्राण वायु संचालन कीन्ह्यो॥
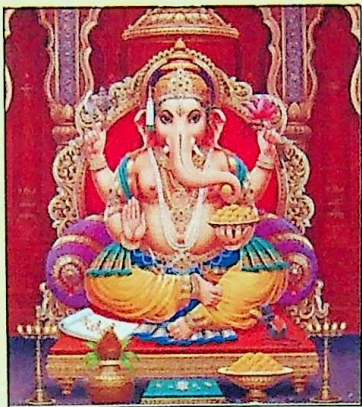
इसके बाद उस सिर को उन्होंने धड़ के ऊपर लगा कर अमृत वर्षा कर प्राण वायु का संचार कर दिया।

श्री गणेश तब नाम धरायो।
विद्या बुद्धि अमर वर पायो।।

शिवजी ने आपका नाम श्री गणेश रखा और विद्यावान, बुद्धिमान और अमर होने का वरदान दिया।

भे प्रभु प्रथम पूज्य सुखदायक।
विघ्न विनाशक बुद्धि विधायक॥

आप देवों में प्रथम पूज्य हैं। सभी प्राणियों के विघ्नों का विनाश एवं बुद्धि में वृद्धि करने वाले हैं।

प्रथमहिं नाम लेत तव जोई।
जग कहं सकल काज सिध होई॥

किसी भी कार्य के प्रारंभ में आपका नाम लेने से सभी कार्य निर्विघ्न संपन्न हो जाते हैं।

सुमिरहिं तुमहिं मिलहिं सुख नाना।
बिनु तव कृपा न कहुं कल्याना॥
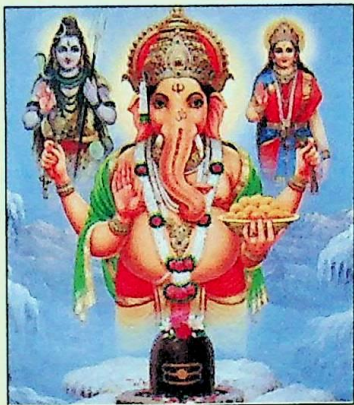
आपका सुमिरन करने से सुख प्राप्त होता हैं। बिना आपकी कृपा दृष्टि के कल्याण संभव नहीं।

तुम्हरहिं शाप भयो जग अंकित।
भादौं चौथ चंद्र अकलंकित॥
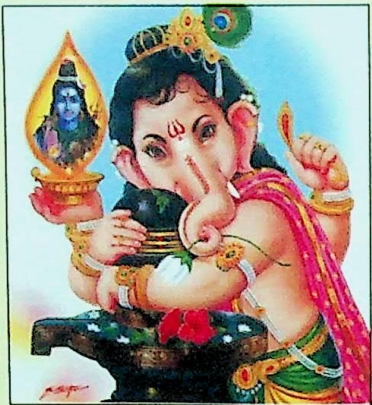
आपने श्राप से चंद्रमा कलंकित किया। तबसे भादों की चतुर्थी को चंद्रदर्शन नहीं होता।

जबहिं परीक्षा शिव तुहिं लीन्हा।
प्रदक्षिणा पृथ्वी कहि दीन्हा॥

जब भगवान शिव ने आपकी बुद्धि परीक्षा के लिए आपको पृथ्वी की परिक्रमा करने को कहा।

षड्मुख चल्यो मयूर उड़ाई।
बैठि रचे तुम सहज उपाई।।
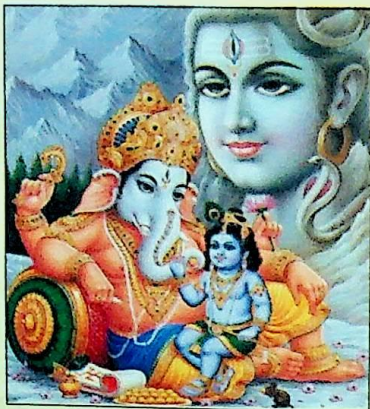
कार्तिकेय मयूर पर परिक्रमा के लिए निकल पड़े। पर आपने बैठे-बैठे ही युक्ति निकाल ली।

राम नाम महि पर लिखि अंका।
कीन्ह प्रदक्षिण तजि मन शंका॥

आपने पृथ्वी पर राम नाम अंकित कर मन की सभी शंकाओं को दूर कर उसी की प्रदक्षिणा कर डाली।

श्री पितु मातु चरण धरि लीन्ह्यो।
ता कहं सात प्रदक्षिणा कीन्ह्यो॥
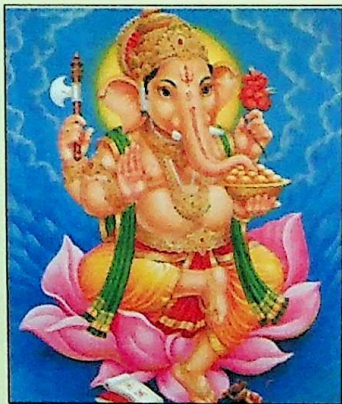
श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक अपने माता-पिता के चरण पकड़ उनकी सात परिक्रमाएं कर लीं।

पृथ्वी परिक्रमा फल पायो।
अस लखि सुरन सुमन बरसायो ॥

इस प्रकार आपको पूरी पृथ्वी की परिक्रमा का फल मिला एवं देवताओं ने पुष्प वर्षा की।

'सुंदरदास' राम के चेरा।
दुर्वासा आश्रम धरि डेरा।।

भगवान श्रीराम के अनन्य भक्त सुन्दर दास जिनका निवास स्थान ऋषि दुर्वासा का आश्रम था।

विरच्यो श्री गणेश चालीसा।
शिव पुराण वर्णित योगीशा।।
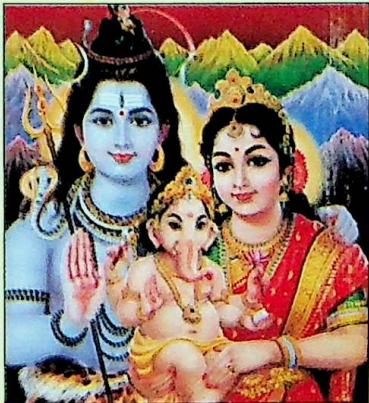
श्री गणेश चालीसा की रचना उसी प्रकार की, जिस प्रकार शिव पुराण की महान ऋषियों ने की थी।

नित्य गजानन जो गुण गावत।
गृह बसि सुमति परम सुख पावत॥
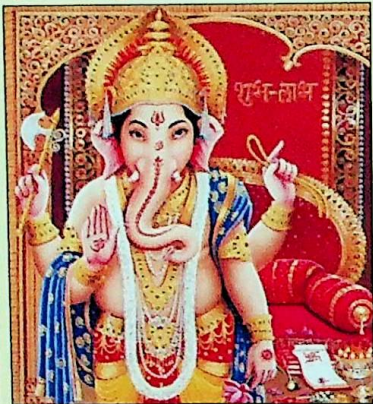
श्री गणेश जी की जो पूजा-अर्चना करता है, उसके घर बुद्धि एवं सद्भाव का निवास हो जाता है।

जन धन धान्य सुवन सुखदायक।
देहिं सकल शुभ श्री गणनायक॥

गणपति की कृपा से सुख-समृद्धि, धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादि की प्राप्ति होती है।

श्री गणेश यह चालीसा, पाठ करै धरि ध्यान।
नित नव मंगल मोद लहि, मिलै जगत सम्मान॥

जो श्री गणेश चालीसा का नित्य पाठ करता है, वह सुख-समृद्धि, प्रसन्नता एवं सम्मान पाता है।

द्वै सहस्त्र दस विक्रमी, भाद्र कृष्ण तिथि गंग।
पूरन चालीसा भयो, सुंदर भक्ति अभंग॥
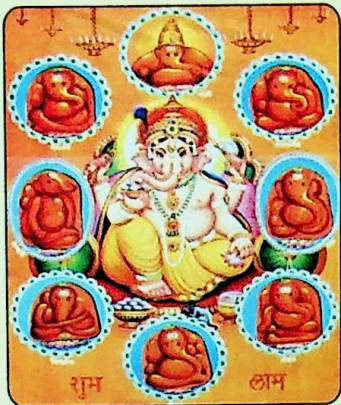
भाद्रपद की कृष्ण तृतीया, वि. सं. 2010 को यह चालीसा पूर्ण हुआ और सुन्दरदास को भक्ति-सुख मिला।

श्री गणेश नामाष्टक स्तोत्रम्

त्रानार्थवाचको गंश्च गणश्च निर्वाणवाचक:।
तयोरीशं परं ब्रह्म गणेशं प्रणमाम्यहम्॥

'ग' जो ज्ञान, 'ण' जो मोक्ष के प्रतीक हैं के योग से जो गण शब्द बना है, उसके स्वामी परमब्रह्म स्वरूप श्री गणेश जी को मैं प्रणाम करता हूँ।

एक शब्द: प्रधानार्थो दन्तश्च बलवाचक:।
बलं प्रधानं सर्वस्मादेकदन्तं नमाम्यहम्॥

'एक' शब्द किसी के अद्वितीय होने का बोध कराता है तथा 'दंत' बल का प्रतीक है। ऐसे एकदंत श्री गणेश को मैं नमस्कार करता हूँ।

दीनार्थावचको हेश्च रम्ब: पालकवाचक:।
दीनानां परिपालकं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्॥

हे, शब्द दीनता का जबकि अम्ब शब्द पालनकर्ता वाचक है अर्थात् दीनों-असहायों

का पालन करने वाला हेरम्ब भगवान गणेश को मैं प्रणाम करता हूँ।

विपत्ति वाचको विघ्नो नायक: खण्डनार्थक:।
विपत्खण्डन कारकं नमामि विघ्ननायकम्॥

'विघ्न' शब्द प्रतीक है विपत्ति का और 'नाशक' शब्द प्रतीक है खंडन का, ऐसे विघ्ननाशक गणपति को मैं प्रणाम करता हूँ।

विष्णुदत्तैश्च नैवेद्यैर्यस्य लम्बोदरं पुरा।
पित्रा दत्तैश्च विविधैर्वन्दे लम्बोदरं च तम्॥

विष्णु द्वारा पाए नैवेद्य एवं पिता शिव द्वारा प्रेम पूर्वक दिए मिष्ठानों का भोग लगाकर विशाल उदर वाले अर्थात् लम्बोदर भगवान गणेश को मैं नमस्कार करता हूं।

शूर्पाकारी च यत्कर्णौ विघ्नवारणकारणौ।
सम्पदौ ज्ञानरूपौ च शूर्पकर्णं नमाम्यहम्॥

छाज के समान बड़े-बड़े कानों वाले, विघ्नों का हरण कर संपदा प्रदान करने वाले ज्ञानरूप शूर्पकर्ण की मैं पूजा करता हूँ।

विष्णुप्रसाद पुष्पं च यन्मूर्ध्नि मुनिदत्तकम्।
तद् गजेन्द्रवक्त्रायुक्तं गजवक्त्रं नमाम्यहम्॥

जिन देवाधिदेव के सिर पर भगवान विष्णु द्वारा अर्पित पुष्पमाला शोभायमान हो रही है, जिनका मुख हाथी के समान है उन गणपति को मैं नमन करता हूँ।

गुहस्याग्रे च जातोऽयमाविर्भूतो हरालये।
वन्दे गुहाग्रजं देवं सर्वदेवाग्रपूजितम्॥

भगवान शिव के द्वितीय पुत्र भगवान गणेश को मैं प्रणाम करता हूँ।

एतन्नामाष्टकं दुर्गे नामभिः संयुतं परम्।
पुत्रस्य पश्य वेदे च तदा कोपं यथा कुरु॥

हे मां भवानी! भगवान गणेश आपके पुत्र हैं। अतः श्री गणेश नामाष्टक स्तोत्र का वेदों सम्मत अवलोकन करने के बाद ही आपको क्रोधित होना चाहिए।

एतन्नामाष्टकं स्तोत्रं नानार्थ संयुतं शुभम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स सुखी सर्वतोजयी॥

इस स्तोत्र का त्रिकाल संध्या में पाठ करने वाला सर्वत्र विजयी रहता है।

ते विघ्ना पलायन्ते वैनतेयाद् यतोरगः।
गणेश्वर प्रसादेन महाज्ञानी भवेद् ध्रुवम्॥

उस प्राणी के सामने कष्ट ठीक वैसे ही नहीं होते जैसे गरूण के समीप सर्प का न होना।

पुत्रार्थी लभते पुत्रं भार्यार्थी विपुलं स्त्रियम्।
महाजडो कवीन्द्रश्च विद्यावांश्च भवेद् ध्रुवम्॥

निःसन्तान को पुत्र, पत्नी की इच्छा रखने वाले को योग्य पत्नी की प्राप्ति होती है एवं मूर्ख भी प्रभु गणेश की कृपा से विद्वान हो जाता है।

मंगलकारी गणेश चतुर्थी

जय गणपति, गणनायक जय हो, जन-मन मंगल त्राता।
एक रदन, गजवदन, विनायक, चतुर्थी के दिन आता॥

भगवान श्री गणेश जी का जन्म भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष चतुर्थी को रात के पहले पहर में हुआ था, इसलिए यह दिन गणेश चुतर्थी कहलाता है। बाल्यकाल में जब भगवान शिव ने त्रिशूल से उनका सिर भेदन किया था, तब मां पार्वती द्वारा एकत्रित एवं उत्पन्न शक्तियों ने प्रलय मचा दिया था। भगवान शिव उसी समय भगवान विष्णु के पास पहुंचे और उनकी सहायता से हाथी के शिशु का सिर श्री गणेश के धड़ पर लगा दिया और अमृत वर्षा करके उन्हें जीवित कर दिया था।

महादेव शंकर ने उन्हें अपना पुत्र स्वीकार करते हुए अनेक वर दिए। उन्हें यह वर भी दिया कि जो भी भक्तगण पूजा-अर्चना करते समय सर्वप्रथम उनके पुत्र गणेश का पूजन करेगा,

उसकी पूजा या अन्य धार्मिक कार्य निर्विघ्न सम्पूर्ण होंगे। इसलिए गणेश जी देवों के देव कहलाए और मंगल व सिद्धि दाता बने। इसके साथ ही शिव जी ने उन्हें यह वर भी दिया था कि जो भक्त तुम्हारे जन्म की तिथि अर्थात् गणेश चतुर्थी के दिन तुम्हारा पूजन एवं व्रत करेगा उसे सभी ऋद्धि और सिद्धियां प्राप्त होंगी। भगवान शिव ने शिव पुराण में भी इसका उल्लेख किया है जो भक्त श्रद्धा, भक्ति और विश्वास के साथ गणेश चतुर्थी का व्रत और पूजा-अर्चना सहस्त्रनाम से करेगा उसके सभी विघ्नों का नाश होगा और मनोकामना सिद्ध होगी।

गणेश चतुर्थी का व्रत स्त्रियों के लिए काफी महत्वपूर्ण बताया गया है। स्त्रियों को भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी, कार्तिक कृष्ण चतुर्थी, माघ कृष्ण चतुर्थी के व्रत करने चाहिए, इन्हें बहुला चौथ, करवा चौथ और संकट चौथ कहते हैं। इस दिन गणपति के सहस्त्रनाम का पाठ करने वाली स्त्रियों को अखंड सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

संतान प्राप्ति गणपति स्तोत्र

नमोऽस्तु गणनाथाय सिद्धिबुद्धियुताय च।
सर्वप्रदाय देवाय पुत्रवृद्धिप्रदाय च॥
गुरुदराय गुरवे गोप्त्रे गुह्यासिताय ते।
गोप्याय गोपिताशेषभुवनाय चिदात्मने॥
विश्वमूलाय भव्याय विश्वसृष्टिकराय ते।
नमो नमस्ते सत्याय सत्यपूर्णाय शूण्डिने॥
एकदन्ताय शुद्धाय सुमुखाय नमो नमः।
प्रपन्नजनपालाय प्रणतार्तिविनाशिने॥
शरणं भव देवेश संतति सुदृढ़ां कुरू।
भविष्यन्ति च ये पुत्रा मत्कुले गणनायक॥
ते सर्वे तव पूजार्थे निरताः स्युर्वरो मतः।
पुत्रप्रदमिदं स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥

अर्थात्-सिद्धि-बुद्धि से परिपूर्ण गणनाथ को नमस्कार है, आपके द्वारा पुत्र एवं संतान की प्राप्ति होती है तथा हर प्रकार से सुख एवं सम्पन्नता प्राप्त होती है। ऐसे देव की मैं

बारम्बार चरण वन्दना करता हूँ। आप लम्बोदर, ज्ञानवर्द्धक, रक्षक, गूढ़स्वरूप तथा हर प्रकार से गुणवान है। ऐसे देव हैं आप जिनका स्वरूप और तत्व गोपनीय है एवं समस्त भुवनों के रक्षक हैं। ऐसे चिदात्मा गणपति देव को नमस्कार है। आप शुण्डाकारी, कल्याणस्वरूप, संसार की सृष्टि रचने वाले तथा सत्यरूप हैं। आप सुन्दर मुख और एक दन्तधारी हैं, आप भक्तजनों, शरणागतों के रक्षक हैं। हे देवाधिदेव! आप ही मेरे लिए शरणदाता हैं। मेरी सन्तान कामना को पूर्ण करें तथा मेरे कुल में होने वाले हर पुत्र को अपनी शरण में लें ताकि वह मन से आपकी पूजा अर्चना कर सके। यह वर मुझे देना मेरे इष्ट देव, ताकि मैं और मेरे पश्चात् आपके द्वारा दी गई सन्तान मोक्ष को प्राप्त हो सके।

यह स्तोत्र समस्त सिद्धियों के साथ-साथ पुत्र प्राप्ति के लिए भी काफी लाभदायक है। हर सुबह स्नानादि से निवृत्त होकर

उपरोक्त मन्त्र का जाप करें। आपकी मनोकामना अवश्य ही पूर्ण होगी।

विघ्ननाशक गणपति स्तोत्र

परं धाम परं ब्रह्म परेशं परमीश्वरम्।
विघ्ननिघ्नकरं शान्तं पुष्टं कान्तमनन्तकम्॥
सुरासुरेन्द्रैः सिद्धेन्द्रैः स्तुतं स्तौमि परात्परम्।
सुरपदम्दिनेशं च गणेशं मंगलायनम्॥
इदं स्तोत्रं महापुण्यं विघ्नशोकहरं परम्।
यः पठेत् प्रातरुथाय सर्वविघ्नात् प्रमुच्यते॥

अर्थात्-वह देव जो परमधाम, परब्रह्म, परेश, परम ईश्वर, विघ्नों के विनाशक, शान्त, पुष्ट, मनोहर और अनन्त हैं। वह देवरूपी कमल के लिए सूर्य और मंगलों के लिए आश्रय स्थान हैं। उन महा गणेश की मैं स्तुति करता हूँ। यह स्तोत्र महान, पुण्यमय विघ्न और शोक को हरने वाला है। जो प्रातः काल इस स्तोत्र का विधिपूर्वक पाठ करता है वह सम्पूर्ण विघ्नों से विमुक्त हो जाता है।

संकटनाशन महागणपति स्तोत्रम्

श्री गणेशाय नमः

नारद उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेनिन्नत्यमायुः कामार्थ सिद्धये॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्ष गजवक्त्रं चतुर्थकम्॥
लम्बोदरं पंचमंच षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टम्॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्॥

जपेदगणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः॥

॥ इति श्री नारदपुराणे संकटनाशनं
नाम महागणपतिस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

श्री गणेश मंत्र

1. श्री महागणपति प्रणव मूलमंत्र: ॐ।
2. श्री महागणपति प्रणव मूलमंत्र: ॐ गं ॐ।
3. ॐ गं गणपतये नमः।
4. ॐ नमो भगवते गजाननाय।
5. श्री गणेशाय नमः।
6. ॐ श्री गणेशाय नमः।
7. ॐ वक्रतुण्डाय हुम्।
8. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं गौं गः श्रीन्महा-गणाधिपतये नमः।
9. ह्रीं श्रीं क्लीं गौं वरदमूर्तये नमः।
10. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवते गजाननया।
11. ॐ ह्रीं क्लीं नमो गणेश्वराय ब्रह्मरूपाय चारवे सर्वसिद्धि प्रदेयाय ब्रह्मणस्पतये नमः।

12. बीजाय भालचन्द्राय गणेशपरमात्मने। प्रणतक्लेशनाशाय हेरम्बाय नमो नमः।

13. आपदामपहर्तारं दातारं सुख सम्पदां। क्षिप्रप्रासादनं देवं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥

14. नमो गणपते तुभ्यं हेरम्बायैकदन्तिने स्वानन्दवासिने तुभ्यं ब्रह्मणस्पतये नमः।

15. श्री गजानन जय गजानन।

16. श्री गजानन जय गजानन जय जय गजानन।

17. शुक्लांबरधरं देवं शशिसूर्य निभाननम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व सर्वविघ्नोपशान्तये।

18. नमस्तस्मै गणेशाय ब्रह्मविद्या-प्रदायिने। यस्याऽगस्तायते नाम विघ्नसागर शोषणे॥
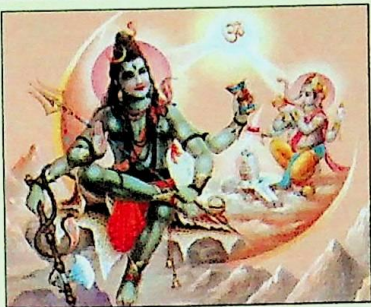
19. ह्रीं गं ह्रीं गणपतये नमः।

20. ॐ वक्रतुण्डाय नमः।

21. महाकर्णाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।

22. यदभ्रू प्रणिहितां लक्ष्मीं लभन्ते भक्तकोटयः॥
स्वतन्त्रमेकं नेतारं विघ्नराजं नमाम्यहम्॥

अष्टोत्तरशत नामावली

ॐ विघ्नेशाय नमः
ॐ विश्ववरदाय नमः
ॐ विश्वचक्षुणे नमः
ॐ जगत्प्रभवे नमः
ॐ हिरण्यरूपाय नमः
ॐ सर्वात्मने नमः
ॐ ज्ञानरूपाय नमः
ॐ जगन्मयाय नमः
ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः
ॐ महाबाहवे नमः
ॐ अमेयाय नमः
ॐ अमितविक्रमाय नमः
ॐ वेदवेद्याय नमः
ॐ महाकालाय नमः
ॐ विद्यानिधये नमः
ॐ समस्तसाक्षिणे नमः
ॐ निर्द्रव्याय
ॐ निर्लोकाय नमः
ॐ अनामयाय नमः
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ सर्वगाय नमः
ॐ शांताय नमः
ॐ गजास्याय नमः
ॐ चित्तेश्वराय नमः
ॐ विगतज्वराय नमः
ॐ विश्वमूर्तय नमः
ॐ अमेयात्मने नमः
ॐ विश्वाधाराय नमः
ॐ सनातनाय नमः
ॐ सामगाय नमः
ॐ प्रियाय नमः
ॐ सत्त्वाधाराय नमः
ॐ सुराधीशाय नमः
ॐ मंत्रिणे नमः
ॐ श्रीपतये नमः
ॐ अनंताय नमः
ॐ मोहवर्जिताय नमः

ॐ अमोघविक्रमाय नमः
ॐ निर्मलाय नमः
ॐ पुण्याय नमः
ॐ कामदाय नमः
ॐ कांतिदाय नमः
ॐ कामरूपिणे नमः
ॐ कामपोषिणे नमः
ॐ कमलाक्षाय नमः
ॐ गजाननाय नमः
ॐ सुमुखाय नमः
ॐ शर्मदाय नमः
ॐ मूषाकाधिप-
वाहनाय नमः
ॐ दीर्घतुंडाय नमः
ॐ शुद्धाय नमः
ॐ विकटाय नमः
ॐ कपिलाय नमः
ॐ ढुंढिराजाय नमः
ॐ उग्राय नमः
ॐ भीमोदराय नमः

ॐ वक्रतुंडाय नमः
ॐ शूर्पकर्णाय नमः
ॐ परमाय नमः
ॐ योगीशाय नमः
ॐ योगधाम्ने नमः
ॐ उमासुताय नमः
ॐ आपद्धंत्रे नमः
ॐ एकदंताय नमः
ॐ महाग्रीवाय नमः
ॐ शरण्याय नमः
ॐ सिद्धसेनाय नमः
ॐ सिद्धवेदाय नमः
ॐ करुणाय नमः
ॐ सिद्धाय नमः
ॐ भगवते नमः
ॐ अव्यग्राय नमः
ॐ ज्योति स्वरूपाय
नमः
ॐ भूतात्मने नमः
ॐ धूम्रकेतवे नमः

ॐ शुभाय नमः
ॐ गणाध्यक्षाय नमः
ॐ गणेशाय नमः
ॐ गणाराध्याय नमः
ॐ गणनायकाय नमः
ॐ वेदस्तुताय नमः
ॐ दुर्धर्षाय नमः
ॐ बालदूर्वांकुरप्रियाय नमः
ॐ भालचंद्राय नमः
ॐ विश्वधात्रे नमः
ॐ शिवपुत्राय नमः
ॐ विनायकाय नमः
ॐ लीलासेविताय नमः
ॐ पूर्णाय नमः
ॐ परमसुंदराय नमः
ॐ विघ्नांधकाराय नमः
ॐ सिंदूरवरदाय नमः
ॐ नित्याय नमः
ॐ विभवे नमः

ॐ अनुकूलाय नमः
ॐ कुमारगुरवे नमः
ॐ आनंदाय नमः
ॐ हेरंबाय नमः
ॐ नागयज्ञोपवीतिने नमः
ॐ प्रथमपूजिताय नमः
ॐ भक्तमंदराय नमः
ॐ दिव्यापादाब्जाय नमः
ॐ शूरमहाय नमः
ॐ रत्नसिंहासनाय नमः
ॐ अमेयाय नमः
ॐ मणिकुंडल-मंडिताय नमः
ॐ भक्तकल्याणाय नमः
ॐ कल्याणगुरवे नमः
ॐ सहस्त्रशीर्ष्णे नमः
ॐ महागणपतये नमः

अष्टोत्तर शंत मंत्र 'गणानां त्वा' जपेद् बुधः।
दिनेदिने सर्व सिद्धि सर्व विघ्नविनाशिनीम्॥
ॐ गं गणपतये नमः

आरती श्री गणेशजी की

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥
एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी॥
अन्धन को आँख देत कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देते निर्धन को माया॥
हार चढ़े फूल चढ़े और चढे मेवा।
लड्डुवन का भोग लगे सन्त करें सेवा॥
दीनन की लाज राखो शम्भु सुत वारी।
कामना को पूर्ण करो जग बलिहारी॥

卐 श्री गणेश-वन्दना 卐

वर्णानामर्थसंघानाम् रसानाम् छन्दसामपि।
मंगलानाम् च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ॥
गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बू फल चारू भक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्॥